Zandramor

नगावम्बुर्भवेर्केशवबुर्



Jana Mayor Jordan















रचान्ग्रस्य स्थान्य स्थान्य

निर्धिरक्षान्ध्याक्राक्ष्याय्येषायः

ह्यायह्नव स्यम् देश्याम्याय्या रवा में में नित्र विग केव ग्राया स्वाया ग्री श्रुप पात हेव क्षेट श्रियापते प्रगात प्रमुद्द के व से प्रगात श्रिया है। क्षराज्य है। दे अदाग्यारा राष्ट्रग्या गु पक्रिंदाने हैं वर्षेत्र क्रिंदा क्रिंदा हैं। वर्षेत्र क्रिंदा थुला ग्रुचा चकुते अंगारी ग्रुचा पते 'द्यदा धुगा है' र्थें पाळेव 'र्ये' ने प्राणे वियावया युःश्चित्रद्वात्राभाषा

नगत'नन'नेवि'धे'त्रु'स'धेव।।

गर्यन्याने। द्वापाययाग्रम्याके। मुञ्जूनायया श्चि.पिट्यार्टर.पूर्यायाया पी.मि.पा.पया.श्ची.पाया गुष्तिं रेट दें त्यया पर दें दि दर्श परे प्राया त ननः व्रेनः है। इस्यायाया कुन्नि स्थायाया कुट्राचरुषा सराधेवा वेगापदे तथा भूट्या शु ह्यायापायश्चरापदे र्ख्यायश्चरावया श्चे वटायो र्मेलाचान्वायार्क्राचरुप्यार्भेग्राम् हारोप्यते। याययापाळव पॅराग्या हे विया व दे विं व ने ने ग्रे म्यायायायद्व द्रात्युर प्रति धेर व्रा सुवायास्य साम्यान्य विषयात्या विष्यायाः ञ्चित्रा भूता पर्याय व्याया पर्या पर्या प्रमान्या भूता पा यह्रीत्रा अक्र्याया प्रम्या अक्र्याया प्रम्या अक्र्याया अक्र्याया

व्याद्ग्रह्में हित्र यात्र या

हे दे जिद्दा श्री वा अदे क्षिण श्री वा श्री व

न्व स्वारा मार्था न्य सम् । स्वारा स् नर'नष्ट्रव'रा'नश्चर्याह्या देय'र्देव'र्क्रय'ग्री' मुलाशेन् भूटाचाला भ्रीयाचा वटा वी द्राया वर्षेत्र विं व गरेषा प्रमानीयाषा व षा देवे र्ख्याया विग्राम् इ.ग्रह्मार्थ्या में ग्राष्ट्रिया प्रति मार्था में या लेखा अपित तर्गेति शुर पीरा पश्चार है। ग्वन गीरा थे नर्नेन्यते नगत केत्र नन्य गित्र र्भेगया हैं। शुव अद पर दूर दु न्नर भाव भा है 'से पान । सराम्बेव सहरार्से हेते केंग प्राप्त हाराया गुरायळॅव्यव्यायायट स्यायागुर्द्व यास्याया विट्र खुर् छेट खुग कु केव पते हेंग्या प अर्देव र गुरु ने गुरु परि कुल रायर गरिग्वारा । ने ला गन्यापरे न्न्न स्था केंब्रया मेन गुन

गित्रेषागी'यट कें पहुषापति क्रेंपा केंग्या मुखर्के क्षेत्राध्या प्रमुक्षा च्राक्ष्या स्वार्ष्ट्रेट्याव प्रमातः पक्रुट् रेव र्धे केते पश्च पा श्वेषापर हैं हेते सिट्राग्नेयास्य पार्श्याचा दूर्झे. हे. दे. गादा इस तस्याहे हैं च्या यर पार्क्या गुः हैं च्या यह है। वर्ने वे 'खुल' क्रें च्या कु 'छिर' नु 'छे 'लें १०११ लेंर' भ्रापक्षमा व्राक्रवाद्यां व्राक्षेत्रं द्रापार्भगमाया लेग्राश्चराग्री अद्याय्याप्य भूट्या अवरा र्ट्यार्ग् वस्या ठर् प्राये र र प्रश्रूर व्याप्या न्दःश्रेगायतदःह्रैनायास्त्रन्यरान्गतः श्रुन् ब्रैट उगार्या र्यायाया ध्यार्याया या गुरा प्राच्याचीरायवापविषय्याने। सर्ववाधीः न्नायानमु सानमु निम् र्शेयादिन पाष्ट्र

पर्वः तथा झरापात्मुरारेषाप्वः पर्वायाः गन्ययापायरात्राच्याया । जन्यरात्राहे त्याव गुं में अद्भारा है या पहिला पार्टी या र्टी पार्टी प केव व रें पा दे त्या मुलाश्रया शे हे पा प्रक केव वू में पार्वि वृते दूर दुवर शृहेषा राष्ट्रेष्ठा प्राय्या व्याधरात्र क्षेत्रायाः ग्री वित्र वे दिन व वित्र में । र्राग्यायात्रम् यात्राक्ष्यायात्रम् वर्षाः स्वार्थायात्रम् पहेन'पर'यहर्'ने प्रमेश'ग्रायर'ग्रेंश'कुर्' इं'र्'अदे'र्पर्पत्र्राम्य्यार्थ्याः थरायायवाने में हिते अगुर थरा मु'गर'ग्रे'तृ'र्दे'प्रह'ळेव'८८'।। र्नि पुष्पणी अर पार्थे र्वं गतिया।

र्थेव श्वर श्वर त्यमा गुरुवा पादे महत्य। र्थे परु दुग हो पर पर्व दु पर परे वा वेयातवृत्वित् वित्यम् वेव वेत्याहेयायमः वू रें पायायत हुँ प्रायाय विषया नेवाया नेवाया नेवाया नेवाया निवाया निवाय गर्रेल'च'चन्च'प्रशाम्च्रास्थान्'रे'र्गेव'पर' सर्व 'सुस'र्'सहस्य ह्र'प'पर्व प्रवास'व्या यदे अकूवा लय लेबा की क्षेत्र प्रकेट क्षेत्र ह्याया धराग्वरा ग्वराधरारेखे द्वराद्यराप्ते र्राष्ट्रिं प्राथान्य रेषा हेषा पञ्च पा लकुलाचा शे हैं पाया हैं ग्राया सु न्या है पाया सु न ८८। स्या में क्रिय राष्ट्रियार्थ्या स्था स्था तिवित्या अपयाताला नेया श्रेट र्गाययाया कृत

ग्राया क्रिन्या अर्थे विवासित स्त्रीता र्'र्पयावे'प्यन्तर्पं'यश्राम्मूर्'याप् र्शेषाश्चित्यो पुरार्शेत्र प्राप्ते वार्षे । तुरार्शे पुरार्थे । तुरार्शे पुरार्थे । तुरार्थे । तुर ठव 'यया हैं हे 'या नव 'चवेदे 'क्रें र है। छन 'पर' ग्री'नगात'नन्विते'गान्ययान्डुन्'नवेयान्या क्रिं के अक्षुत् अटय यद्या में की ये कूर ८८ थे है प्रथा ग्रह हिंग या पार ए उत् पर है। मुल र्क्ष्य मुं अद्वा प्रविष्य विदा शुदा पश्च पा प्रवित्र पेट्र प्रयम् व्या श्रीय प्रकृत है। प्रवट त्रवर्षा बिद्या केंगान मुद्दा खुर् पेते मुन देरा रेटा नर खुट नष्ट्रव पानवेवा नरे नुग्रेय गयर गरुवागर्रवान्य कुराके कुराके किया मित्र किया तसर लट्या त्रारा होया वायट ह्याया वायर अदे

त्युर तर्गे वी धेंद्र सुग्ग्यायायाया संकित देव केव पन्न दें दिन देश सर्वेद्र स्थाप र तर्चेषा से नृगुःषोः नेषा सदतः पद्याः सरः पः केषाः गुः न् म्बार्या वर्रेन्द्र है जाने वर्षे के प्राचित्र है गर्यानु र्श्वेर स्व र्येर रेगास्ट पष्ट्र है। पर प्रिंदि श्रियायक्ष्य ग्री प्रदेश प्रायम्भा वानियान्यान्त्र अह्ट छेटा गनियामेटा इया मुला में। मुद्दा केवा दी त्या र्रोग्याया पाता वाता पष्ट्रव पर्देश अट र प्रश्नुर वया भूय एव भुरा नु इसम्या गु कुन क्षेत्र मुंग नु सर्ना नगुन ग्रम्याम्बर्ख्य स्थाने वित्राप्त प्रम्याने या र्देव हैट रेंदि पहुन पादरे विगायर प्र पहुंगायाधेव वें।।

ग्रिषायायायात्रेषा

지원도'지를도'도다' 월리'지를도'죽| 15도'한'축| इ.इं.चेब.तथ.वेशट.च.चश्रभ्राग्रेथ.श्राप्तिच.तपु. पर्हें न पर रेगायायाय किया केया केया केया हिरा हिया याद्या श्वाषाग्री श्रयायविद्या केरे पानेषा गतिव 'पिले सेंग्रामप्यम् अस 'प्या पहेंच 'पा सर र् ज्ञेन प्रते गर्ड में ने ने स्क्रिय गा केन प्रने निया प्राथित्रामी, भाष्ट्रियामी, अर्थ्य हैं ये तियह हैं व्यासव्यास्यायाचेवा द्विताया केवा पाव्टायी। र्स्याक्षेत्र केंवार्स्य निवास्य ग्रीवार्श्व वावार्थेत्। व्यागी'गा'केव'गर्डट'र्रेट'गी'येश'हेंव'र्केव'र्रा'

व्यय में या योषा श्रुयाषा जेवा छ्टायो गा केव याटा वट यो से तार राज्य पार्थ स्वाय इं अर पाला अपिया शुपार्थे क्रिया अपिदे भूर क्रियाया क्षेत्र स्वाधित प्राप्त या वर्ष में या केवा प्रविर ग्रामायायाये वदावया ग्राव्द में देंगा केंया भ्रार्से हे त्या प्रमुषार्से र में हे गुरा वा पूर्वाया गन्व निवे स्निन् त्रोयान अव नगान्त परुषायाग्वदा गर्डटार्रेटागे सेषाङ्ग्रेवार्सेवा र्रात्याचि प्रचित्राचात्रम् वात्रुवाया पृत्राया यरयामुयार्वेदायायवार्याद्रायठयाया गवटा देंवाग्री अर्द्धर हैंव दिनट दे था ग्रायर यातर्यायायायायाया सम्ब्राभियायायाया परुषाग्वराष्ट्री दर्गग्रुषायापन्तराकुवासा

निवाप्त्रम्यः पास्त्रस्य स्थाप्त्रस्य स्याप्त्रस्य स्याप्त्रस्य स्थाप्त्रस्य स्थाप्त्रस्य स्थाप

ह्वा अर्ख्यः ह्वं न्वा ह्वं न्या ह्

प्रम्यारार्ने निष्यार्मे हैं भेरीयायायया पश्ची या भुः न्नाया नुयापार्छेटापाराळेवारीर्भेगवा ग्रीयागयन प्रति कुन या द्योदे द्वियायाया दर मुर्यासुम्भूरान्। ।गाःकेवाचिवाचाम्।माः वदाचीःकीः यापवरापाई हे या श्रुपाप श्रुपाप ग्रुपाय प्राप्त प्राप्त । ने इंदर्भे द्वारा वराया वे गावाया भेरता शु ग्याया सेंद्र देव के के प्रति प्रव कि लगा ग्रस्थमान्त्रे भार्मेव रहें सालेगा स्नेट प्राप्त प्रमुंद त्र गुट वट गे से तार्य द्या है व न्न स्व केंद्र प्रवास्त्रम् स्वास्त्रम् स्वास्त्रम् स्वास्त्रम् पासराप्रवालुकाप्रकातुं रेष्ट्रवाकाप्रग्रेकार्वेटा र्ने नुस्य वार्षिय वार पति'सु'केव'गुव'ग्री'अर्केग'ग्री।

वर्तिः रेग्रायं वे 'हुर्टा पं प्या थे 'या वे या रवा मुत्य अर्ळव '८८। धुय सुट र्ळ '८गर मुव 'या देश' ग्री'श्रवासु'रन' वृद्'द्रित्'श्रवास'तव्वा'धे'र्ल' १००० लूर.शर.लीज.वीर.घर.वी.वी.ची.भी.स. इ.ष्याची.यप्रतितारी.भी.पर्विट्यामे.ह्याता न्यात विषा अर्कत यार्षिया कुट हते न्या भ्रान्या यन भुगविववारादे अँ । या वें र यें द वा र्रें र वस्रयारुट्। आसुन्द्राः आवेषात्रीः चट्याः चट्याः मु'न बुद्रा नद्रग'र्रे' क्वें छेर तर्देव लेग पते द्रो क्षराच्याने विटायाञ्चराञ्चयाञ्चरप्रायन् नगाधुयाग्री यानर्ने द्वा द्वा सुर्था सुर्था ग्युटाङ्गेव 'द्रापु खुट 'येव 'हव कु 'यर्थ' सर्दित्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य

नन्नन रेटा यमा हुरानम सुया हु। न्या र् वसरारुट् सेट वी क्ष्मां सर्वा सर्वा प्रहित्। सहर नेते भ्रेगापाया मेन फुल्में न्यान्य पर्या क्र्याचित्राक्ष्याः श्रीयाश्रीयाः श्रीयाश्रायाः चर्याः पते कें ज्ञास में मुन्य स्पार्थ निया स्पार्थ निया स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वा प्रविवा हे शुं शुराणे अरापार्थे द्वि विप्राया गानुगराभेटा वेंगाअर वेगा बेंट कर गरेंट गो व्ययार्क्याया पहेव वया श्रया अपर प्रगु विंगा बर ग्रायायारा ग्रीयाया सु । या नि । या वराम्झेगानु मञ्जूग दे द्या प्राया करा सेदार्थं समा यायाचेत्रायाते प्रति कें पर्चे प्रचित्राह्मसा अळ्व संक्रां रे ता पष्ट्र प्रते र्ख्या ग्रेषा स्ट व्या

गरेगराने। इया नष्ट्याहे र्यं अर्थेट यट मुरम लाल्याक्षाम् र क्रियागुरासामुकारामा के यातुरमा पते'नगात'ल'से'तगाल'नते'न्स'नरुत'न्म। बे'चरुन्'न्यार्थेय'न्यात'न'न्यया'नु'सेन्'रा शुन्पदे अवर व्रायन्त मु अतेष है। विग सर र्शे वर प्रो पश्चेत मी क्रियापायात्र यवता क्षेत्राता व रेति सिट प्रक्षेत् क्षेत्र अर्क्त्र ता व्यास् हे कुया वर्ष्य प्राचित्र वर्ष्य वराय पर अर्केषा क्षु नुषा कु र षा तेषा ग्री न ग्रीय दिय पर्वेट्या ने प्रमान प्रमान देवे के मेन प्रमान पहेन् पते झ र्क्षेण्या घर्या छ द न्या यापर दा यथास्रेर पत्यायापर ध्या सर्चा पर्दि प पत्र दें न्र्याशु अर्थेन विन व्याय न्यान्य न्योय वित्र ग्री

अग्रेव गरेग मु ग्राय र अर्ब द द्राय प्रवद पा र्से हे पन्याया है। कुर्गे खराया अया प्या ख्या येव प्राप्त वावर है। हैं च्या ह्या निया निया च्यात्यार्झे तद्या श्चर ग्रे त्राचा रेवा यो रेट वेत अर्व अट्र पर क्षेत्र परि अवरा त्रया है ग्राहे हिर दिविद्यारा है यया है। यर व्याप्याञ्चायायाः विवान्याव्याना देवा धर-दियट-दि-विदेशका-दिवा-लूटका-शे-ह्रिवाका पान्ना विन्यमाग्वनायाम्या अपित तर्गेति द्वा पकुर ग्री ग्राप्य अया प्या श्वरा ठन् भ्रमाकन् मेन् प्रमानुमाना मित्र कुर्यानु गवदा दे द्वराह्म अदे अद्वाव वर्षा गद्य अपाद गर गे क्वें तर्देग्यायायाया केंद्र व्याहे विगाव

यवणाययाग्रीपन्यानभूयानाष्ट्रमञ्जायतेभू स्तुव व्याग्वर पार्विप है। हे पर्व्व ने दियों। त्वित्याध्यान् स्वायार्थान् अवयाययाची अर्ळव् 'स्रेया स्रेर 'धुअ'या स्याया नेयाया वया त्या अट 'र्सेट' वर्ण ब्रेट.ब्र.ब्रेट.टे.विवर्ग ब्रेट.विट.वश्रश. ठट्रायहवा भुः धुराचा र्यवाया विवानुः भुँ। चते। इट र्ख्या ग्रे कुट रच मुग न सूया हे सूचाया है गरुगानु गर्वियापदे प्रमायर प्रमायर प्रमाय ब्रेट्रायर श्रुपायर छ्ट्राट्र्ग्रेया वया वयार यया 75 ८. भे. य. थ्रा. लंदा क्रा. य. र्रे'रुव'नु'पेरा'रा'सर्वेट'पर।।

रे'वर्षिन्'ने'रु'वके'मे'नुष्णन्।

८.ईजायाच्याता ह्यायाता लेव।।

वेषार्श्वाषान्यान्यत्य न्द्रा द्वीव त्यया यदायदा यह्रे हिं। विगानगर हे से निम गविव यह स अदे'सुट'पष्ट्रव'पदे'गव्यासु'र्ट्ट'हे'से' र्शेग्राय्ये नेत्र प्रति दे त्या तर्के पा च केंद्र रहेश प्राचित्राचे कराने दायहेवाया पहेवाने नगतः श्रुन् न् द्रेन् नुवार्यवार्यवार्थवार्थः श्रुन् । प्राथार्थः गठग मु गर्वय न भु के दे ने न या भू के प र्हेग्रायायाय्ययम् ध्रित्रायार्हे हे तकटायीः र्गे तस्पर अर्देव पु अर्द्य दे भराष्ट्रि प्रदेश र्थित क्रॅग्राच्यया उट् वट देगा परे ये यया गुरम्यित या रोसरा गर्ने ५ वर्ष दें ५ गराया है। से ५ हैं ६

धराविं वया केंद्र हिना दे तयाया केंद्र द्वर यद्रायम् अपार्थेयाय्येयाय्येयाय्येयाय्येयाः र् 'यात्रेग्राप्ते'र्देव'ग्री'प्रकाते'र्ठ केव'र्पेर' गुराने। गशुरारवासर्रिष्टे पद्धानिषाद्रा श्रे प्रविते प्रवित्य में इते अध्य प्रविते प्रवित्य में में दे दे वि अगुर मुलेव पाय विग्वापाय के अद्यापा नर्गेन्द्रासुर्या स्वात्रा स्वात्र स्वात ल्याक्ष.क्ष.क्ष्य.क्ष्या.श्या.विच.ट्या. पति सु र्श्वेम र्श्वेन त्व्याय तर्गेन पर रेक्या नकुन्गी'वर्देर'येव'न्न गन्त्रमा'मी'र्देश' तहेंव वस्रा उर् ज्या न र्रेग्या सर्रे र व अष्ठित पर्से त्राग्यासुमा ग्री भेव ' प्रतास्यापा स्त्रम्धेत्रपास्तरप्रम् वात्रप्रात्र्राभत्र

प्रवासिक्षेत्र से प्रमान्य विष्य स्थान यान्यान्याः में नियात्रात्रां में या निया वहिणाहेव ग्री श्रूट पार्ट पश्च बिटा देव लमुलानते न्वीन्यापान्न भूराने केंबागी। त्विरायां अवता अयापा विगाप भूरापा अर्हित प्रमा यह्या हेव प्रमम्भा सुराध्ये रेट सुग्रम् श्चे प्राप्त श्वाप्त श्वापत व्यास्त्र ग्रायाया प्रमाण स्वारा स्वारा स्वारा वयायायदाद्रम्थत्यायम् शुराने। द्रग्रम् ग्रम्यागु पविरादे अळ्राप्याया ग्रीया से प्रियापा न्दाचरुषाः श्रम् अदेव 'यम'न्यातः पते' बिट गायाच देर पब्द दे।

गित्रेषापार्यास्त्र स्ट्रिं है। ग्राम्याषापारे । क्षेत्र पकुर ग्री'ग्रान्ययापादे'यहिंद् क्रिंत कुट वट रहेया ब्रोट न'वे। ने'यम हे'नर्ड्व'के'यान्याम्यायान्यान्या न्ना धान्यायात्रात्र्विते सुन्नित्र प्रमुन् ग्रेन्स्रिन्ते, अ.क्षेत्रिन्येयायार्ग् के हार्टा श्रेन क्षे.ची.प्रथाकिटार्ड्रे.इ.चीवायाता.य्यायावीयायी. श्रमानमुन्द्रा ने नदे श्रमान्तु गर्मा मा लम्भाष्ट्रमाष्ट्रम् स्थात्र्र्यम् स्थात्र्रम् ह्रेग्रास्व स्वर्धेर से स्वापायक स्वर्धियायाया या केव रिते ह्या द्रा अवसाय विगार्डेव रायशा रशंकुटा हैं हो ग्रायाशाराश है पर्व्व ग्री अपूर्व न्ना न्यान्ययान्यायायात्यार्यात्यात्यान्यान्या याना गानुमार्सेदे प्राचे देंद्राता न्यान स्वा

प्रथान्याकेव प्रदारम् अख्राक्षिया अपाप्ता अर्द्ध्यापरागुरा त्रायते श्रदापष्ट्रवापापविवा कु'ग्र-प्र्डिव'व्यावु'र्रे'द्र-थे'र्रे'प्राग्रेश'ग्रे' न्र्याश्चित्राश्चित्राकेवाने स्वापति अन्वाश्चराकेना यायतः तर्मेति रक्षा भूर ही या द्या व्या या गरुगागुनापते मुलार्से त्यसार्के न्यमासे न न म् अमीव यार्भग्यायायाते भूयार्भ्या है । हैन रहेगा र्घेना भु कें विगान्त्र वारामें में निम्न प्राप्त में निम्न में निम्न प्राप्त में निम्न में निम्न प्राप्त में निम्न प्राप्त में निम्न प्राप्त में निम्न में निम्न प्राप्त में निम्न प्राप्त में निम्न प्राप्त में निम्न में निम्न प्राप्त में निम्न में निम्न प्राप्त में निम्न में नि स्यम्प्राप्ति प्राप्ति प्रापति प्राप्ति प्राप्ति प्राप्ति प्राप्ति प्राप्ति प्राप्ति प्राप्ति न्त्रित्रा ह्या अर म्या हारा हुव या है। रेट पति हेव तड़ेल दुं कें द्यमा अद द्यह क्राभीयाशिता चयाक्र्यापटी वृत्रिपटा गट्यान्य श्राचायाया स्था स्था स्था म्या

यते'गर्रेगरासु'तहेव। क्षुव'चकुन'ग्रे'गन्सरा प्रते अह्र वे गर्ड में मुया पाषुट र्कट प्राया गान्ता ने त्या रेया प्रमानकुत्ते त्यों अर्थेत् गर्डटायाकु'रुषाग्री'चगादार्श्रेवाकु'केरागर्नेट्रा न्नु'या निम्यारी'र्यापाया यहेगा हेव प्रार्थिंगा मुलानामुलानासर्वेदे चनार्केषार्भेगवागाम्न देशादम्। अर्गेव र र शकेव था गवद हो देशा पर गास्रागावार्क्टायाप्यविष्यार्थे दे स्रिरार्वा खुटा पष्ट्रव तर्गेत देव अर्द ५ छेटा छु ५ पर ५ गुर पर्नेषागुःश्चेपार्क्षणषायवतायषापरापश्चराने अधर भ्रां शुका का श्वरका धरा शुरा कें व दि । यानेयायार्थे।।

गित्रेषाया प्रगाद प्रमुद्गागुर ग्री गार्ड्या मुद्र हे म्रमार्गापामक्व प्रित्यास्य म्यायायाया भ्रम् नुट खुरा रोग्रया द्वार ये में या ह्वा हुरा पति भ्रुव स्र म् में प्रति पार्वेव वा वा तें प्रामुल न'र्ने'स'सेन्'स्याम्स्य कुर्यापर खुर नष्ट्रव विटा पर्डमास्य प्रद्यागुराकेया सम्मारुट्गांगु रटाचिव क्षेत्राचाद्याच्याचि केटा दे तहीं व यर पर्झेय पा विगा है। है पह पर्झ प्राप्त रायेते अर्दे थया गुव द्याद र्च द रद्या वया अ र्देट्या नुन्द्रमानुन्द्रम् मुण्यानायाक्ष्माप्रानुन्ता चियाय। यत्या मुयापमु हूँ त्यत र्पाया यहेत नगुर हुरापा द्यो पते स्पा हुरापते

न्याया में या नेवाया केवाया केवाया केवाया विवाया केवाया के यर विग्रम्भार्य भ्राप्ते अट र्या ता स्व पा प्टर पटे यप्रसिरं विवायाया अटं द्रार्चयाया चिटं ख्या रोग्यान्यते हें हेंन्य हिंग्या हेगाय छेव रॉते नष्ट्रग्रापान्द्रित्या वेगायाळेवार्यायात्रा यर हेव पालेग तज्र प्रत्युर दें। लेश र्शियायायाद्वीत्याद्वीत्या हे स्वराध्या में दादीया स्यार्थ्या स्ट्रान्य द्वा । त्याव यो दे । यो र्था । र्दर्याधेव। विषार्दे हेरे सुरायष्ट्रवापायविव। हे अतुवाबेद द्वावादी है है है या पहु हैं या गव्यापते जुटाळ्या येयया द्यता हे 'दे 'तेदा हे' नते गुरु । अया रन जुर प्र र रेति या से खुग छे । म् १००/ म्र भारविर्या गर्वेव वेद रिया

वयालम्भाश्यार्थस्य स्थान्यत्रात्रात्रात्रा प्रथा श्रव प्रति कुलार्पिते इसाध्य प्रप्ता यो र चलेश ने 'तर्गे 'च 'द्यम 'मु 'सेद 'धरे 'श्रेम 'तर्से ' पर छेट परे देव अह्र प्राप्त मार्थ हेर न्यायो हिट अट खुया न्यो प्रमेश हैं। स्वा भेषा र्याग्री अनुवावयायहेव पर हैंग्राया है। यन्या नितः भ्रें मुंद्रायायाया निया मार्थित निया मार्थित निया मार्थित मार्थि पर्वेषापश्चित्राप्या वर्षापावहेंव पाष्ट्रस्य ठट्'ग्रे'वट'व्यामुत्य'अर्ळव्'ग्रे'र्नेग'क्ष'स्ट्राण्य ने वया रेया पविव सर् 'स्याया ग्री'प्रगाद 'त्र' न्व्रात्र्येयाध्यास्यास्य स्वायापान्या छन्। पर'द्यो'प्रशेषाश्च्याद्याप'द्रा श्च्याष'रे'पा मु र्णव प्रप्या र्श्यायायाया भेषा सुरा सुरा मुख्या मु राया

रेअ'र्सेग्रार्'र्ने'नगत्गत्ग्रान्यरापिः अत्र'नगः स्रवतः द्या ग्राम्य प्रमान् स्रमा प्रमान विषा स्रमेशा के'ल'र्स्चित'यर'अईट्'पिते'पगात'ग्राट्ययापष्ट्रव' पति क्वेंव 'बे'केव 'पॅर गुरा हे 'विग 'व 'हे 'पर्व्व' बी'ल'र्यापदि'हुव'रा'ग्यव'रा'र्टा देते'ब्रेंट्' लाहे पर्व्वाग्रीष्ट्रवाह्य है पर्व्वाग्रीया गुटाहेशावहेंवागु अळवाया द्या श्रेटा हैं हे दहेव'रा'दह्य'स्ट्रिं मुग्यायारादे'मुव्रावेया विग्रायायायी गर्दे में हिन्द्र निव्दर है। वन्य ध्या कु केव 'र्रा र्रायाया अव 'ट्या यी 'चगाव 'घर्या ठट्रमायायेट्रप्र-द्योगप्रविव पञ्चयाने

भूषात्रास्या भिष्ठे क्षेत्र सूर्या सारा सहर विया पानक्रेश स्थारिटानहेवापरेगवयास्यारी न्राग्री रे पें गन्त अर पत्र है। श्रेंन अर स्त्र ब्रिट्य स्थरात्याचगात गान्यरात्यरात्यरा देया प्टा अर्दे'श्याषा नेट टे तहें व त्या ध्या केव ग्री केट गोषानमुन्दान्दा हुन्सेन्द्रस्यषायाञ्चासार्था ग्री स्वा केव स्व र्वेद स्वा धेव दा पश्व व व व कें त्स्याकेव 'र्या केवा ग्री' त्रिं र त्या प्रभूर प्राथ लया.श्या.पड्डा.प.इंग.प.वी.य्याया.यर्जा.वी. स्तर त्राता होता त्राता होता है। र्च ग्राडिया तर्देश ग्री ग्राद्या स्वराधर पारेव र्घे

नगात नकुन थेन्य गुः कु तर्ग है नुर गुर

ने'यान'लमुत्य'न'हें'हे'तकन'वी'नगत'र्दी'स' बेद्र'यत्र यात्र प्रत्य त्र्यां अर्वेव प्रगात प्रमुद्द रहेया म्यायाय मेटा देखा <u>न्रचे व नगत नमुन् के नवे कुन नमुन् न्र</u> गव्यान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्या र्या न्यायार्या नेवार्या के त्या ह्या निया विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्य प्रथमार्था मार्थिया श्रिया विष्या मार्था या या स्था मार्थिया न्नु से त्राम् स्यान्य प्राम्य स्यान्य स्या ग्रें में मियारी गया हैं दान में आगर्य या गया प्रमाधिया प्रमाधिय प्रमाधिया प्रमाधिय प् विटा ग्राया हैंट मुं क्षें या हैंग्या रावयायता ८८.अथअत्रत्र विटालटा धूराकाकुराका

पश्चित्राय्यार्केयापकुत् चुरातु यहाया र्याग्रियायप्रियायप्राय्यायाळ्टाचगादाचकुर् यगामु दे हे मुल री लया यगम्य प्रमात पर्मा नगात नकुन्। न्याय सं रेत सं किते भ्रायकेन कुट पार्विव क्षेत्रा कुषा विस्ता क्षेत्रा क्षेत्रा का नगाय नकुन् नरुषा चुन् नगाय नकुन के प्रबेख्याम्यायायाप्रदे। ८८ री गैं किट प्रगत पकु द वे।

मुल'सर्केषा'गा स'रा'र्षाण्या सुस'स्रिक्ष'स्रिक्ष' १११० अर्दे प्रमण है में दिया देश प्रमण दिया गर्डटावस्याग्रुस्य न्यव्यायायि देयासेटा ग्री'प्रमेव'गनेव'र्'अदे'श्वग्रां भुर्'अर्रे'श्याया रेगायावराप्टरापठरापदेयाव्राख्याया गन्ययान्यामु अर्के द्वार्यरायायव नययया सवर ध्रेत पर सर्दि दे। द्या केंग ग्री गिर अह्टा याञ्चा सराग्ने हे पर्वत रमा कुटा पा र्रोग्यापादे प्रदेश ह्रीय प्रमुक् रहें या प्रमुक् धरात्राह्म अर्थाया व्यव स्रेव छी रेग्या पत्रा मु पङ्गेव वया धीट्या सु ग्यायाया पादे । झ प्ट अपित तर्गे हो निते हिगाया नरुन नु शुर पते ग्निम्ययायायप्रियायायुयार्क्टार्ह्यायातु

पर्वेषाप्रयान्ययाग्यम् प्रमान्यः पर्वाचेषाः धराशुरा अतुमामेट द्वायारेंदि द्वींट्य देव हैंग्रायायते यो नेया पर्व विषय शुर्विय व्या ळेंग्रायाय्याय्यायायायाः यो स्टार्टे तर्स्ट्रि न् वित्रभूतायावस्याग्री गासारी गानसारम् ग्रीसा त्र्री देव द्वराग्रह्माय्यस्य प्रमाग्रुया प्रमाप्य तगुर विषा हैं होते । श्रीषा पृष्ठियाषा प्रमुद्धा यहरी यरिजानि अस्टि स्थारिय रेगा स्थया ठट्गी' वर पदे या रेंब 'बेंट्य सु' बेंब 'पर' सहि क्षाप्तराधे नेषास्तराद्यी नागो सा इययाग्रीयान्तुः वृत्वयार्थे ग्यायेर अर्देरयाञ्च व्रिन्न् पर्वेद्रम्य पात्रेग्या व्राथा म्याप्ता व्राथा प्राथा प्र

पर ग्राम्यायाराते खुवा व्या यार व रा प्रविः ध्रमाप्रम्यापादी। गायार्पाम्याग्रीः रापा ८८। इटास्याद्वीवा देवाक्षेत्रगरम्भदेर्देत् कव मिटा हैंदा सटा मर्खर सु है पवि तथा हैंग अदे 'द्र्येव 'यावय'गाय'र्च 'यादय'र वे 'ही'र्थे' ११८६ सॅर ध्या यहना यहन राय विवास श्रद्याद्याद्याद्याद्याः ११८० स्थर स्था यन्या देवा सेव गार सदे रेव केव सेट वे छे र्थे १११५५ लॅर सुग पन्य द्या गुरे हें द खर अर्द्य सु वे छे लें १११० वे स्य छ्या यहचा हे ईश्यायी, यक्षेत्राता ह्रियाया दिरा होजा यदा श्रापया. गुनगो द्वापाय । यापते भूर र्स्यायाया र्से पर्दे पा भू सु रवेषा र्सेन

पायमा गर्डें ने के पक्षान्तर गराये भी सेट रेगर्चेन नगर १ द्वेत भु सेट परु पर्न पर क्षामुन तर्गे तर्ण सेन अया में हिते पर मुर्जेन लयाश्रमाग्री र्व्या र्वेता र्वेता यात्र क्षेता यात्र स्त्रीता स्त्रीता स्त्रीता यात्र स्त्रीता यात्र स्त्रीता स्त्रीत न्नम्ध्यावान्यमः रून्यवान्हेवायानेया व्या व्ययायर्गिन मृत्यी से मुस्येट देया व्या न्यतः र्च न्द्रा ने श्रेषा शुप्तगातः गाने र खुद गे वेद प्रदे तह्य यर्गे द क्रें में या सहत प्रया भी स्ट्रिंस मुंद्र र्रेग्याया यर पाद्र मुर्य केत सूर्य पति र्कट केत्र पे पर्देश केटा दे श्वराष्ट्र प्रमः र्गुव अष्ठिव से मु इस गा रया अर्दे प्रथया न्ययाश्चर्यास्य प्रस्त क्रियात्वर स्त्रात्वर स्त्रा

पति केंग म् कित पे पर्या मा दे ने में भाषा मुन नष्ट्रवःश्चिषःश्चेवःपर्यः नस्तुः ध्वाः देवा पर्यः वाब्र स्वायाणी तर्वित्यास्यास्य स्वाप्तराग्रा नगात नकुन ग्री अर्दे स्याय निम् कुन कुनकुते अर्गे ने सुर सुर सुर पर्वे ग्विव यदा हे सुर पर् प्रवित्र ग्रामेग्रापदे द्विग्राया श्राया है ग्राया स्वा व्लें में या रेव केव ला पर्ने अकेंगा अपित त्यें क्रव नकुर्गी नगात ननमा देते श्रुवानकुर्गोम क्रॅग्निक्र्न्यान्व मार्ने स्थान्य प्रमुक्त अट'नगत'न्ड्रिट्र्न् हे'न्ड्र्र्पंक्र्यंन्ड्रिट्य र्दे हे दि । गर दिनद केंग ग्रे दिनद श्रुग गे वियार्स्स्याष्ट्रग्रह्मा हे केव 'र्यादे 'स्या श्रुया ग्रुया नहेरागास कवारा सेट् विचरा गु नगत र्जेवा

प्रहेत स्याविषायहँ प्रवाद प्रहेत स्वाप्त । स्वित स्वाप्त विषय स्वाप्त स्वाप्त

गित्रेषाया प्रमाशुप्रगाद पश्चित् वी

मुग्निश्चर्यः देव छते श्विपायते पार्टः पं यह या मुग्निश्चर्या प्रमायते प्रमायते प्रमायते या मुन्ने से स् मुग्निश्चर्या प्रमायते प्रमायते प्रमाया स् से से मुग्निश्चर्या प्रमायते प्रमायते प्रमाया स् से से मुग्निश्चर्या प्रमायते स्मायते स्मायते स्मायते स् स्मायते स्मायते

विषापिते प्राञ्चनषा वषा गुप्ता ईव गवषा है षा इवर्हा थे गे तही स्वाप्त हा सु हो राजेग रा शुरागुटासान्ध्रव परासान्ध्रव परासान्या न्व कं न अन् पर अन्त न्युन यान्य न्युर अपिव र्पे चु तर्भा तहेंव र्क्षा विषया तर्मर यश्यत्र मुं इत् हे अळव दें हे कुय रें र गरें या प्रथमाशुः ह्रायाच्छुः ह्या र्च्या प्रहेव ने यहें इग्राग्ग्याव लासदेव परारासद्य प्रगृत्या न्यर पार्श्यायापष्ट्रेव वयाप्याय यान्यया गु क्र्याभूर या श्रुया पा तुया या तुया प्राप्त विया प्राप्त अपिव 'र्रा'न्न। न्यो'प्रवेश कु'न्यर ग्रीश श्लेंन

न्यें व अर्द्र ने निष्ठें व प्रमार्से पाया न्यम केंया गुं मुल अर्ळव दिन हा या मुल्य र्या र्या या या या परि क्र्याभूर अधयः र्वा र्या र्वार्या वे गठिगाप्य अतुवाबेद 'द्रग्राचार्य 'झु हिते 'झुव' ह्य हिंदा देते कें कें या गुरा ह्या हिए सार है। अर्ह्र प्रते अवरा हे निया रापते ग्राप्त अराप्ता यापहेव हे इर मुप्ति प्रायय के हैंग परे नुस्रयाप्त निर्मा देश प्रमाणिया विया व्याप्त सामानि र्दे चित्र विष्णु के नित्र विष्ठ पा क्षेत्र यो स इंट्रियान् वें अर्थेट्रायम् इंप्रियं विद्राय विगार्धेट पार्थेव गर्यात्या हे या स्वाप्ता विगा नष्ट्रव र् अर्गुर् में र्ने र र में अपार होरें

गर्यान्या अव देव देवा भ्रेया भ्रेया व्यापार हो । गटार्डिते र्ख्या रुपावटा है। हे तिरे किटा ग्री रुटा व लें गरुम नुप्रवासा दे धर हे सुरार्गे पा सु गर्नग्राप्या ८.८८.२ग्रेग्यम्याप्रथात्रा प्रिन्द्रं स्था बेद्राया वस्रयं उद्गीयापगुर न्वेंबाग्युन्बाने नेंवां मुखार्क्यान् न्नान नभूमा ने वया रेया निव भूमा या यह दुरा पाला हे स्थार्पापते खियाया प्रगाद ख्या खुर्चे ग्रियायद्वार्णेयायभ्रम्याने तर्वाराण्डिं र्चेर यह्री ही ज्रा, १७५५ जूर दिना स्व त्या श्रा शुते'गुव'पबट'वग्रांर्विट्'र्'ग्रिव'र्यंप्रित' है। दगे तर्व मि पर्वे पक्ष प्रमान्य मार्येया

यः शक्तियमें स्वायास्य स्वायास्य मित्रास्य मित्रास्य मु से द दा ता के रा गी ति द र ते प्रायम से भी रा से प ष्ठियायायर्भेराने श्चेत्र छेटार्ग्यायर अर्हित देरा म्। पर्वायाया प्रायायाया विवाया हे स्वायाय स्ट्रायी । पष्ट्रव पार्चुग्रवस्य छेलापते स्वेव लया नभुम्यापाद्य धुयागव्य द्वम्भु ख्याग्रे नर्गेन्यान्तुं गानेषा हेगा हरान्य मन्ते हे केंश तस्यारी केंगागु तिवर लेंग नर्भेर न निर्मा केंग मुन्यो गन्यासु मुन्यास्य द्या स्वर्षा पन्पापार्सेग्राम्'र्स्'अर्ळराग्री'त्र्याधराचर्'र्थे' क्षायानभूम्याने मिलागुग्रे० स्याभूयापते भ्रान्य्यापते र्ख्यान्यस्य है। विर्गे अर्गेय भ्रा

गर्नेगराह्र्याह्रायद्वाग्राह्रायां केवार्येया हे विगा गन्व यान् भुन्या ने हेया ह्वन्य क्षण्या विषया गु गर्टालयातिहर्यात्रित्र श्रुव श्रम् ग्राम्यायायात्र स्ट्रिट ग्वरार्भग्राम्भेराक्रव देयापर विवादा स्थया ग्रेम्यान्त्र मान्सुन्याने सुनायते सुरायळेगा यदे द्याद्रायत्रया विषा विषा विषा विषा प्राप्त पृते शे'नु'नुट'कु<mark>ठ'कुश'अर्ळव'ग्रीश'र्</mark>चट'ग्रे'हे'र्चेर' यह्र छिटा दे वे केंग शेट ग्री यहिव र र प निव मु के ला अपिया पर्वं पान्य पेंदे 'पेंद 'म्द न्याया में या स्वाप्ता न्या स्वाप्ता न्या स्वाप्ता स्वापता स्वाप्ता स्वापता यक्ष्यापते क्ष्यापक्ष्या विषया उत् तहें व क्षेत होताचरि होता यथा हा व से दारा प्रमुद्र या श्री

गशुम्राया तयतः र्सम्यगतः पकुन् दी

अनुअ'सेन्'न्ग्रार्थेते ह्येन'स्युन'राते 'न्नन' ध्या तरात रें अ प्र राज प्र प्र ह्या अरा रे अ धरामकुराधा है। हे पर्दे ने ही लें। गुग्ये प्रमुषा त्तव री क्षेत्र ग्रीय हूट अपर क्षेत्र शास्त्र विस्तिष्ट्रिया विषा अते 'द्र्येव 'यावय' द्र 'क्षेते ' नेंन् हेंन्याव्याख्रहेंन्यायन्याव्रन्यांव्रन युथार्कें प्रथया गृत्व ग्राप्त न हो। में ११८१ में राष्ट्रया पर्वा पर्वा स्वारं र् ड्रेंब परे पक्र पर्हेंब पर्डे पेंबे दर्शे अर्थेव ने श्वीप्रमा केवा थेवा बेटा वर्ते वे प्रमासा प्रमासमा वटाळेवाञ्चेयाञ्चार्येयाच्यार्ये प्रमुटार्सेयायाञ्चटा न्यास्त्रेव अयान्य कुषा शुः शुरु न हित्र

यान्ययापते कुन हे होन् ठेया प्रव्याय प्रवित प्रांत्री

पवि'या र्क्यायायाय प्रमुद्दा दी

ब्रात्र्र्चर्या स्वाप्त्र स्वाप्त्र

पर हे 'द्वारा'र्य कु हेते 'द्वें क 'र्य हे 'क्वें अ'रा' र्क्याप्रियमा हैटार्चा यह या ने ख़्ता रेगा भेगा र्भेटा ग्रे'ग्रान्ययायार्विनः हो नहीं समाप्या देव द्या चिट ख्रिन रोग्या गुं हैंग्या पाय में त नु गुरा है वर्ने ने न गी में या अवे प्रवेष या वर्ष र्ष्य था पर न्ग्रेंव वे न हित हु या मूंन हिर गु उ वर्षा या व्याभ्राम्या सुर्वा यो सक्ष्यया क्या गुर घट में ट दिया शु यावया छे ता ११००५ तेर स्याप्तिया ग्रिटा स्टाम्स्या त्याप्तिया ग्रिटा स्राम्धाः १११५० विस्धिया पत्रपा देस पेंद्र ग्री अर्केद्र पा प्रविष्णेषामुन्यम् मुन्य स्त्राम्य स ग्यायापान्यादा पक्रुट् 'ठेरा ग्राग्रारा नेट । पर भ्राप्रा केरा शेट ।

ह्येव 'यया ग्री' सदत' ह्यद' स्वेव 'मृ 'कुष' वतद' नेन्यान्यवात्वात्वात्वात्यात्यात्रां नकुन्दिन्न ने से सून में। चगाव चकु ५ ख्ट चकु ५ ग्री चगाव र्शेष र्शेव र्क्या है। स्वा शु हैं। है। हुया रिते र्श्विताया गर्गरार्थेगान्यान् ज्ञान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्या ग्रेश हुर र प्राप्त विद्या र व ग्रम्भराम्यायो प्रमातः प्रमातु । प्रमायायातः नकुन्'कुन्'नकुन्'न्य बुन्'निल्'ण'नकुन्'नु ग्यायाराष्ट्री वर्च स्यायानेया विस्तिर्यानेया श्चराधियाविया वाधवान्वावियावियाने पक्षरा NA

८८.स्.अथअप्राच्यातःयक्रिट.स् न्ययाम्याम्याम्याम्याम्याम्याम्याम् तर्रोताः अधर सिव क्रियापाद हैया हैव या शुरा अर्गेत्र त्यूषा प्रकृत हो प्राया स्वाय हो गुर नगत'न्रकुर्गे'नष्ट्रव'प्रदे'र्श्रैव'द्रोट्र'र्प ११०३ लॅर पॅर पॅर प्रायापाय उव मी हैंट्या अर्रे पिर्थयाः सिट्यायो प्यायायाः द्रिया स्वास्य सिटा गे'रादे'कर'र्डर'हूँन्'ग्रॉब्व'सुट'गे'र्ग्नेट'तिहोर' र्दुं दुं वियाधित्या शुं म्यायाया पार्र र रेग्या वे रेंद् श्रुति द्वा त्वी क्या श्रुप्त प्राप्त म्

नक्षम् छूट-दु-व्यान्यान्ते सेग्यायन्यम्। न्यो परि परिषायाने व अट दें श्या अर्दे ह्या या ग्रीक्षां अटार्पायवा श्रुष्याक्षात्रे प्रिति हिटाटे दह्व हैं अंतर्भेट दिवाया केंट्र अंतर्भिट्या अट्रें क्रिंट्रायायायात्राच्यायात्रायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्रधु के पार्भेग्या गुग्या या पार्थेया देव हो है। स्या ग्रित ह्रव पायायव प्रयाश्वाया र्याया हि । पगाग्दि । विचयाया पष्ट्रेव । वया हेव । प्रांच । प्रांच । लेव नया नयो नक्षेव र हिया ठव न माया ध्या मु केव 'र्रा श्व श्व 'ग्री ग्व स्था पाया पाने व 'व श' हैग्रायापाष्ठ्राप्यापहेया प्राप्तार्थाक्षात्रा पश्लेव हिंग्या गुं हैं या पानिया निया ग्वर

ग्री में हे तहें व पाकेव केंग्र पत्वावाय है। है। वें १११० विस्क्रियायां क्रिक् द्रांत्र हो स्वाद्र याद्र या स्रवियाध्यापन्याक्षे रेसप्वित सः श्रीयप्या मु अद्या त्र्या ने द्या है या है या है या है या त्र्या पते र्क्षत् गुम् गर्नेषा गुम्स हेन्य संस्था स्था ने द्वर पहन पति सप्तान्यो पत्न थेन विद्य न्या क्या विस्ता रेव र्ये के या रमा यस प्रमा ग्राचेग्राय्यायम् । यह प्रति प्रति प्रति प्रति । प्रति प्रति । स्'र्रे र्थाययाग्रम्'रे त्यायाप्ति'पष्ट्रव स' तर्वापति परुषापार्ख्यापविव क्रिंट पति इसा वर गर्डट अपन्या मेर प्रवेश दे द्वर श्रद्श

मुषागु अह्र पा ठव केषा हे प्रशेषा पा पा केव र्रे ने ने निष्याया ग्रे ने ने निष्या प्राप्त में मुन्या स्वाया भी निष्या स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वया स्वया स् ने। गारुगराभु केरा प्रिंप स्याप्त स्थाप्त स्थाप नष्ट्रव हैं। नि या नकुन तहें व ग्री सु क्षें न गर्डें में हे भ्रव हा देव दें के प्रमा भ्रव हा होवा हा ने वा प्रमा है । उर्वट ग्वेया विट पर हिग्या श्रम हिव स्ट प र् अदे परर् थेग्रायर् राम्मुर्या रे थरा हे वर्षेत्रपुष्पत्रुष्पप्राञ्चेत्र मुन्यः ५८। ५५२ गव्यापदा भ्राप्या खुंया वेटा पवेया अपिव 'द्यो क्रेंद 'द्युम ने मुद्द 'द्या दुम दे 'र्डम' व क्षा हो । यदी । या प्राप्त । ग्रें बूट्यासुया सुदाही दे प्यटा रे वस्या उदा

त्र्ञे'गुर'रे'प। वर'वस्रग्रं'ठर्'त्र्ञे'गुर'वर' पावेषाग्रापायापादी पान्व नगर पें वें रादहेंव ग्री'र्चित्र'गात्र'फ्रें राकेरा'केर'गार्थेरा'रार'शुरा गावत' यट गन्व राजाया प्राप्त प्राप्त राज्या प्राप्त राज्य रा ख्यायार्क्यान्यान्द्रमा केवा स्था हो ना विवा रटास्यायायायादार्श्च्या हुवार्सेटासाधिवापिते यर्ने कुन्यव प्रवादि प्रकारादे प्रकार वि म्राज्ञीयाग्रीकियान्यवेयायवेयायव्यान्याः त्युवासेन् सेवासायम् प्रविवासायाः सेवासा सर्देर व तयपाया अर्केग ख्याया हे केव देति इया रेता पश्चित्रां अर्गेव 'के 'क्ट्रं देव 'दें 'के 'अर्केग 'द्र' पश्चित्रायर्गेत् खुट र्कट रेत्र रें के त्यागित्रा भ्रासिट रेश विवाद क्षेत्र ए भ्रुप्ता अर्गेव के कंटा

देव'र्च'के'ग्वित्व'र्च्या'श्रुंश'हु'स्ट्वित्यं न्ग्वित्यक्ष्या'चित्रव्यक्ष्या'श्रुंश'हु'स्वित्यक्ष्य श्रुंव'श्रुंच'र्च'योव्यक्ष्या'योव्या'र्ट्चित्र'श्रुंच्यक्ष्यः श्रुंव'श्रुंच'र्च'योव्यक्ष्य'र्ये'त्वि'श्रुंच्यक्ष्यः श्रुंव'श्रुंच'र्च'योव्यक्ष्य'र्ये'त्वि'श्रुंच्यक्ष्यः न्यात'र्श्वेल'र्चे'याव्यक्ष'र्येत्वेत्र'र्येते' न्यात'र्वेत्र'र्वेत्र'येत्वेत्र'यंतिः न्यात'र्श्वेल'र्चे'याव्यक्ष'र्येत्वेत्र'र्येते' न्यात'र्वेत्र'र्वेत्र'य्वेत्र'य्वेत्र'य्वेत्र' न्यात'र्वेत्र'येत्र'य्वेत्र'य्वेत्र'येत्रेत्र' न्यात'र्वेत्र'येत्र'य्वेत्र'य्वेत्र'येत्रेत्र' न्यात'र्वेत्र'येत्र'य्वेत्र'य्वेत्र'येत्र' न्यात'र्वेत्र'येत्र'येत्र'येत्रेत्र'येत्र' न्यात'र्वेत्र'येत्र'येत्र'येत्र'येत्र'येत्र'येत्र' न्यात'र्वेत्र'येत्र्येत्र्येत्र'येत्र्येत्र'येत्र'येत्र'येत्र'येत्र'येत्र'येत्र'येत्र'येत्र'येत्र'येत्र'येत्र'येत्र'येत्र'येत्र'येत्र'येत्र'येत्र्येत्र'येत्र'येत्र्येत्र्येत्र'येत्र्येत्र्येत्र्येत्र'येत्र्ये

यानेश्वास्त्रम्यात्यस्य मुन्द्रित्या क्षेत्र । स्वास्य क्षेत्र । स्वास्य स्वा

पिरुषा गार्था में द्रापेटा राष्ट्रीटा द्राष्ट्री वे गार्थ पायमार्श्वेदायह्याप्टा पश्चपापहुमार्भेगमा ग्राया प्राया मुं केर अर्हि प्राट सें पर्छे नमुन्यम् भ्राम्य विषायन में हे निम् क्रा क्रेंव 'यय 'रच' मु 'श्रूट' क्रे 'यळव 'चग्र' केय 'द्राय' गर्राया नगुन्यन्य नेर नवेदि भ्रम्पय न्य्य सुर व्यान्त्राम् निष्ठ्रवान्त्राम् । त्राम्याः व्यान्याम्याः वस्रयान्य विषया विषय यातियातातियातेयात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र् मु केव 'र्रा क्षें अ अद ग्रे हैं ग्राप श्रामाया तिवित्या ही ला ११५० सूर इ त्यू अर्थे र त्या

ब्रां मुं प्रां शुर प्रमुव पा सुर ग्रा व रा भूग शुर न्वेंब्रध्या पन्य है। नेर न्यो पत्व बया ग्रम्थास्क्रीत्राद्यात्र्या प्राथा प्राथास्या स्वार्थितः वटारा विषा राते 'क्रुव 'राते 'ग्राग्या राया या केटा ट्र' वियायार्श्वाया होत्राययात्र्याययाद्यायात्राया धरापश्चित्राने। अधराप्याद्याद्यारे। प्याद्या न्वें न्यानाक्ष्यान्वे न्यात्या विवानिया क्ष्यानिव । न्। हि'यरे किराग्रे हे शासु द्वा केवा केवा अर्वेव दें र्श्वाया ग्रेया पाद्व या देवा पर पश्चित्या प्रथान्त्र त्रायागुद्र क्रियाक्षर प्रदूर कुर्या शु सुर क्षेयात्रम् है स्रिक्षार्त्रात्र हैयात्रम् योग्रात्र यट्या क्या प्रतिव 'र्च व्यायाया पा प्रायया या या व्यान्या के विष्या स्थाप्त विषया के वा

भुं खें मुव अर्गेव रेंगावर प्राप्त केव कें प्र हेव छ्र प्रमण्डव विव मु अद र्थे प्रमा छ्र धरःर्वर मुगः पवे पगवः तमुर देव र्धे केषः गर्डेंग'गशुट'रच'गरेर'वेंग'र्ट्'भु'वेंग'ग्रे' स्वायान्याप्राप्तान्य वार्यान्य स्वायान्य स्वायान्य स्वायान्य स्वायान्य स्वयान्य स्वयाय स्वयाय स्यान्य स्वयाय स्वयाय स्वयाय स्वयाय स्वयाय स्वयाय स्वयाय स्वयाय स्याय स्वयाय स्ययाय स्वयाय यक्षेत्रायालेयास्त्रायायायायायायायाया वर्षाचेवराष्ट्रेवामुको देवकाच इराष्ट्रवा सुराधायदायायदाविषायावेषासु ग्रीषान्। यायया गुपा गुष्पुरा सुप्पा मुष्य द्वाप्या मुष्य द्वाप्या मुष्य द्वाप्या मुष्य द्वाप्या मुष्य द्वाप्या मुष्य द्वाप्या मुष्य द्वाप्य स्वाप्य स्य स्वाप्य क्षेयात्रर्थेयाक्षेयातिर्द्यात्र्याय्यः पावेषायापयापये स्वापया प्रमाप्त्र प्राप्त प्रमाप्त्र प्राप्त प्रमाप्त्र प्रमाप्त प्रमाप्त्र प्रमाप्त्र प्रमाप्त्र प्रमाप्त्र प्रमाप्त्र प्रमाप्त प्रमाप्त्र प्रमाप्त्र प्रमाप्त्र प्रमाप्त्र प्रमाप्त्र प्रमाप्त प्रमाप्त्र प्रमाप्त प्रमापत प्रम प्रमापत प्रम प्रमापत प्रमापत प्रम प्रमापत प्रमापत प्रमापत प्रम प्रमापत प्रम प् मुगाव्ययायाप्त्र पाने केरापक्ष्य पाया

यह्रम् ह्र्याचित्र मुख्ये दे प्रवित्र याप्रयाप्रये न्ययास्तावन्यान्नान्याः इसाम्या र्शियाया भीया कव 'रेया चिंव' ग्रीयायाया प्रचट 'दर्' नेन्न्नाम् तर्वेषयाप्रतेष्यर्म्नाप्रमुद्यार्थे। न क्षेत्रे मुंग्रायदिर तक्षेत्रे विट प्रविग्रायदे क्ष्या स्टान्ष्रवापन्यपश्चित्राहे साञ्चरादेव र्या के अर्केग '८८' एश्चित्रया हे 'व्यया हुट' देव 'र्च' के' इयायानेयाग्रेयायाँ प्रवायाग्री पाव्टास्याया ८८. रेगा गवरा छे वट गे भट थेग झग देव रटास्यायाणे कुट्रायदे अवाट्या देवारी के ह्रगाः श्रद्धान्य देव ह्रग्या एत्र के प्रवेश गवद्यविव पर्दे।

ग्रुअ'रा'र्वे'स्'र्गत्र्यकुट्'र्वे।

त्र्ये अर्थेव मुल र्क्ष्या सुप्त्रेव लगा सुप्त हो दे यट मुय र्क्ष्य देव केव अर्थेव वे। गर्डट हेंट न्याणुः भूप्राच्याय्याय्याय्याः भूष्राच्या गर्टा केर्रिक्ष ११११ में १११६ में १५ किर्या त्र्रां अर्गेव 'प्यां सें युं पार्रेग्या मृत्र खं प्रमुत् खुं स्यानेश्यक्षेत्रान्। ध्याः क्रांक्रेत्राक्ष्यायाः अधर हिगापायकेश हि.ज्. ११००१ ज्य हि.सं. गन्व राध्या यहचा हर्षेव यावय ह स्रित रेंद याभुः हेंदाद्या होदा खुया छैंदा खेंदा देराद्या

पवि'प'ब्लेट'र्यापगाय'पकुट्'ट्या

न्त्राधिक्षाम्यावाकान्यमा स्वाद्याचा सान्यामा प्रमुन्य स्वाद्याचा सान्यामा प्रमुन्य स्वाद्याचा सान्यामा प्रमुन्य स्वाद्याचा स्वाद्याचा सान्यामा सायामा सान्यामा सायामा सायामा

नकुन्भन्यादम् अर्वे अर्वे व प्रवा के सु पर अह्य गन्ययान्यायय ने क्रियायान्यय हेग्या न्याञ्चायानेवानु ह्यायान्योयाने। कुर्नेयान्तिः कैंगास्टान्यान्वायान्या विवासितान्या गवरान् कृते खु नृष हैं माव्यास्ते के के स्था क्षंगिवि पर्गाहें पें शु हे विषाप्ते में विषार् गवरा श्रेस्क्रिंसिट्रंग्वर्वं यासर्द्वया ग्वित देव द्यग मु अद या पश्चित रायश्चित क्रव इ स्पाना विया ग्रामाया र्या दिते हिमाया श्रया गर्डं ने प्रथा कु में प्रदे का श्रूया दर्शे प्रदे अर्गेव र्पे गर्डटाया मुन्या थे निया हैं है

(११५८१) ११११ वे गर्ड छा में प्राचित्र कर ही लें ११८१ लॅर तिहर्म नग्र मार्म नेरागनेषायवायार्श्वितान्धेवान्धुन्र्ज्या पहेन ने अर्दे ह्याया यात्र त्यायायायाया सहया ने या न्या या या ने ने व या है या या या व्यायापताद्रायाव्याविद्या स्याकुराध्यार्रे ब्रैंअ'ब्रेंन्'र्यायो'ग्रान्यया'र्या द्रें'न्या'रु' श्रया'रा' गिनेर वर्षा पविषा रप श्रूट ग्रासुस परि से सूट में दी में १२०५ में र हे ब्लेट र राया प्रज्ञ हैं हेया सुट पष्ट्रव पापविव प्रांव पाय देवा पाय देवा था दर्छेषान् स्वेचयाने छेया है नियं व हिंग है ने त्यर सेन्यान्यान्यान्यान्यात्व्यार्थन्यम् मु

गर'ग्री'ग्रुच'ळेव'द्गुते'क्य'श्रुव'त्व्वा'अ'तु' न्गु'वय'यान्र'तस्र'न'न्न्। तन्ग'भु'न्ग' ने वर्षाः भ्रमायमः विचः मः नद्भः चन्नेषः प्रमाविचः धरायर्गा छेषा ग्राय्या देराग्राद्व था यद्वाया पति हेव तहीय अर्ह्य प्रति विषय अर्थ तर्वा, ये. ये येथा हूं है. सवा, श्रूथा, दराजा है थे. त्व्यापिते पश्व पाच में द पिते हेव लगा पर्छे नकुर्र्ष्णियास्य शुर्ग्णिया निष्या देखान बुर् क्र्यान्याच्याच्ययाक्रम्यात्र्यापाचेरा न'न्न' तर्गे'अर्गेत्र'गर्ड्न'र्गः मु'र्गः गु'यून' श्रीत्रस्यार्श्वेष्यायायम्यात्र्यायायावेषाः तर्नेन्याधेवा तर्गेष्यमेव्यार्यन्याम्

श्चेंत्राक्षांत्रकाराः ग्राम्यादाः द्वार्गाः श्चेंताः यास्याम्बन्धन्यायम्नन्यायाः राधाद्रेगराया मैंदार्क्याया मेंदार्क्याया मेंदार्व्याया मेंदार्वायाया मेंदार्व्यायाया मेंदार्व्याया मेंदार्व्याया मेंदार्व्याया मेंदार्व्याया मेंदार्व्याया नक्ट्रायाद्यायाया क्रेंद्रायच्या वाव्या क्रें भ्रम्या द्यारीयायीयायीयारीययायकुराया यान्यात्रुगान्न। न्नेवाळेवाय्यापाव्या नकुट्र'रा'श'<mark>गट्रव'रा'नकुट्र'रार</mark>'ग्रग्रा'वेट'। लमुल'द्यद्विया'रा'भ्रास्ट्रेट'रावे'रा'गुव याष्ठेव पज्ञ नगर राँदे (१५५०) । १८९३ वयान बुदाल कुला द्वादा त्व्या पा क्षे सेदा देश व्याप्तात्र व्याप्त विष्ट्र प्राप्त विष्ट्र वि यर प्रविग्राया विवादा एक कुरा प्रचित्र प्रमुगाया

भ्रास्रिट पर्छ गतियायळेंगा वया पष्ट्रव पार्श्व गुव 'केष'केर'ग्राष्य 'पर' हो द'परे 'पद्या' नेद' ठव भाष्ट्रया चेंबा यावव थाट गाव अछिव राज्ञ नगर रेंदि लिया र्रेनि हे हे हे न नग नग नगर पनर रॉर रिर्पिकिर गर्मिकिया क्रिया क राः द्याः द्याः मुः अर्केः र्गप्येयः गुप्प्रो न्या अर्दे।प्रम्याम् माम्नुवादयेवायमा प्रमा न्यन्यम्ब तसेया मुलापस्यापान्ग्रेवः अळेंग ळेंचा ग्रेंग मुल दें। र्सेग मार्सेन मार्सेन में हैंगरापान्गुप्ता अनुसाहेराप्तियापानि न्नम्कु'अर्क्ष्यायान्यायाक्याक्याक्यायान्याया मुलामु न्तु क्षावाव न क्षेत्र स्वा क्ष्या रोनावा

र्श्चेन्'ग्रेस'स'न्यास'हेन्'श्चन्'चर'यासुस'न्'नेन' नकुर्रित्राञ्च्य त्र्व्यापरे नक्ष्र्य पाञ्चेता हे ८८.त्.मेजावश्यात्राच्यात्र्यात्यात्र र्रार्द्रम्अतेष्णुयानु प्रवृग्याया नेट प्रवृत्र सुगा नन्नाप्रसाम्बद्धार्थितः भूनाप्रदे मुत्रास्र स्व पर्व्याया यदः अर्दे प्रथया पाग्रास्य प्रध्य पर्वया यम नगान्यन्यम्ब तस्या रिप्परा १८१० वे हे झे से पार्या द्यर प्राच्या सिट्रियं निविष्यात्रमाश्चित् निवि नश्चन गतिषाग्री भें नषान हन पात हैन भें न म्रियाग्रुअ'ग्री'अर्ह्र प्राचम्रित्या भ्रेंप'अ'ग्राग्या ठव मु अर्के द्वा ग्रास्य अर्केंद्र 'प्राया ग्रीय' से '

वियापान्न् भिरा धरागुवा अविवापरार्गारा ग्री'र्स्याञ्चर्या'त्रा'र्या'र्या'र्या'र्या'र्या' न्ना नुप्या मुन्या स्वाप्या स्वाप्या राते रेटा स्यायान्यान्य त्र्व्ययाः सुरायाः स्राप्ताः स्राप्ताः स्राप्ताः स्राप्ताः स्राप्ताः स्राप्ताः स्राप्ताः स्राप्ता मु ग्रायायाया है। अर्देर व से छेद त्व्या पा त्रुगाधेन श्रुन्ये श्रुन् श्रुन् श्रुन् र्वेन रहेम र्वेन ग्रीपर्दिर ग्राम्बर्धिर श्रुरा श्रुरा ग्रीप्रहेषाग्री होया र्यश्रेम्य प्रमुव्या स्वार्थिय स्वार्य स्वार्थिय स्वार्थिय स्वार्थिय स्वार्य स्वार्य स्वार्थिय स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्थिय स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार सर्कें श्रेव प्रमासद्गाप्या द्वापश्चाप्य पते हे अ कु च के द ह ग पर ग्रायय पति व पति।

स्याञ्चरायायगाय कुरावी

श्चरपागुनार्वनानेषारनारोद्वीते धीर्था १११५। स्राया विषया ग्री निया स्रियाया यही स्रिया का लगानु गर्ने गरा श्रुर प्रमार हैं र दियो कुला ग्रें अदे सुद दुर्व विष्य विष्य अदे द्वीव प्रविष्य श्चरावस्थान्य में निर्देशिया गुग्रे में मान्य हेट में द्वांव ख्वा पन्य केंग्रा प नेश हेंट क्ष्याप्राय द्वा द्वा द्वा द्वा स्वाप्त स्वाप् न्वें व 'यो ने या कुया अर्ळव 'र्येग्या गुरा गन्व 'या' त्यात प्रम्या प्रमाया प्रमाया के के अधिर र्थित्।

नुगापाधेलायानगातानकुताने।

त्र्यां अर्वेव पायो नेवा पर्सेवावा वे छि वे १११० र्यराप्यथावटाकेवाहूटाह्याध्याध्याक्षाकाकी गर्भर स्मा मृ तहुर्या गर्व राष्ट्रम् क्षें में हिंदा व्याद्वेव अदा इटा मुंदा है। प्रवे यया नर प्राप्ताचे द हित्वर केव हिंद है। कु'थे'कुय'व्यायत'यहँ द्'गुं'ते'विय'द्'थेंद्। देर-द्यो त्र्व द्वे या द्या द्या द्या द्वा क्षेत्र क्ष ग्रेयारे ग्राट प्राट्ट क्रिंग स्वा ग्रेया या यह ग्राट विया वेर ब्लिट हे र्बेव ग्रीया वायर प्रगुर्य विट प ज्यायटार्गस्यायाहाइ उत्यह्या कुर्ये गुरा पर्वे हुँ न्याया अन्ति पहुँ या हूँ ना अप्यायन अन्य

पर्व पायाधार प्रचार प्रयाद पर्व र

च-र-नःभ्रतास्त्र प्राप्तः स्वाद्याः स्वाद्यः स्वादः स्वद

नकुर्'प्रश्वा'गर्भेन'नगत्निस्ते।

यद्भव के प्रवि कुट प्रमुद र मुग्याय प्राप्त ने या वाद्यय प्राप्त के प्राप्त

व्या भूयाया स्वयापादिन प्रमायहिन प्रमाय नगादःश्रॅभः छिद्राधराचारे भेवातुः द्रामुषासुः शुरा नरः भ्रान्याः भेषाः नयः द्याः द्याः चाराः वीषाः पष्ट्रव पायारे आग्रीयाययेया ग्रीपारिया श्रेट्राङ्कर्यायाज्ञेट्राच्यायायाज्ञेट्राध्या मु केव 'रेंदि'ग्रान्ययापदे अव 'रग्रा देव 'रें। के' गर्भराग्री भटाल्व क्षान् पर्दे केटा वे प्राप्त कार्य परम्। अ'तुअष' विद्मु' अ'क्या'पर' यात्र पर्'। तर्ने प्रविव 'यग्राया सं।।

नगाद'नकुन्पदे'के'न'शु'नम्न

श्चिर्यात्यात्यकुत्यति के न्यायत् र्ख्यानहित्व। श्वायात्यत्वत्यात्त्रात्यात्त्रात्याः स्याक्याकीः र्ष्ट्यायात्यक्तात्यात्त्रात्याः स्याक्याकीः र्ष्ट्यायात्यक्तात्यात्याः स्याक्याकीः

र्वेषाग्री मेरा तर्मा विषा केव ग्री रोस्राय मुन् ग्रयायाग्री:न्याकेंग्राह्यायरान्गाया इस्राणविर प्रविग परि हेट र प्रगत पक्रूर नेव में किये। प्रदार्किया विवा अस अस हिंवा वी कुन्निन् शेलिते हैन उषाग्रेण प्रमान्य श्रुवार्चापते दे प्राप्त निया महारादे हुन रोमरा नियं विद्यो विद्या सक्षा सक्ष्या सम् विया प्रचार र्स्याप्ति प्रशेष्ट्र या रोपा प्रया गुते ग्राया भूग अदः प्रते इस वर्षे न्गा तर्ने गुन पते क्रिंय ग्रुय क्रिंन गरेग गर्डट्रायाकुर्यागुरिवायद्येयार्रे हूँअया वा सम्बन्। विद्रायम्यार्थः रे त्यादरः सम्राज्यः छन्।

क्ट्रिंन् भून्। वियापास्त्राया गवन्यप्ता गटा स्थान् पर्वे विषय स्थान स् न'सर्दि'परे'सेरा नगर'नकुद्र'प'बेरा'पाशु' पश्चर अर पार्थ र्द्र या पगात पपरा शु अरत पत्रग्नम्भग्राम् अर्द्धत्र प्रमुद्दार्भन् थयान्कुन् पदे प्रमाद ग्रान्यया ग्री यान्यया न्या ग्रायव विद्या भ्रिया सुराय वर्षा प्रकृत प्रदे ध्या मु केव 'र्वित प्रमुद्द 'रा देव 'र्वे के ला प्रव्याया ने। ने गनेषा बुदाय बेया दुः श्रीदायषा वापगायः नकुन्न नर्देषायदे में गार्केषाया ग्री ने अया थे'व्यान्या'पदे'येश्या'तेन्'यत्यात्या'यदे'रून्' वयादगार परि पर्यापन्यायात्या दे प्राध्या

चलर् दें हैं दर्पि तुरुष्ण लेव चिव क्रिय्य ग्री पक्रुट्रायाधेव बिट्रा सर से सेंग्राया शुग्राया पर्दिते इययाग्री'नकुट्र'पर'सेट'नय'नट्र'देव'ग्रिय' यापहेव प्रारापकुर प्ररापविद प्रवर थेंद्राया हेंग्याराये।प्रदेश्वाराश्चराप्रशादहेंवाप्रये।गुरा वैतानकुत्रपासळ्स्यासाळ्त्रपासाञ्चरानकुत् पर'यद'ग्राग्यापदे॥ नगात नकुर पांची वर्षापानगात नकुर रू न्यायार्पायावायक्ता न्यायेया न्याया अप्रत्राश्चित्राध्नित्रं द्वात्र्वेत्राप्राश्चायात्रा गन्त पाळेत पा ते गा अप र्भग्या र्भग्या अपया गुन

यट र्च पहेन है। वैठ रु हैन न या केया तिया मु कर पर्भेर है। पर्वाया ध्यायार्घट यो भट्या लेव राया भट्या पारा प्रमाद प्रमुद्द राय म्यायाया म्द्रापायगादायकुट्ग्यो गाद्रथ्याद्रयायकुट् रा'र्चुका'ग्रार्थर'र्द्रा'य्यक्ष भुग्वाक्ष्यं कुर्याक्ष सुर्वे वियानु शुराने। देटायी भ्रम्यशासुद्रदागाया र्कटा अन्या हे 'तह्या अर्गेव 'देव 'र्गे केते 'प्रेव पा' गर्रं नें शुरापते गाया र्कट द्वेत् ।पगा प्रया र्थे। केते वट वे गु केंग इया गर्रें भ गट्या प्राप्त अया द्या क्रम्भ क्रम् स्या स्वा स्व न्या स्य स्व न्या स्व गव्द प्वविव प्वविग र्रा स्वतःच्याक्षायात्रे निः पाधाया

